अन्तर-अन्वेषण का समय

बाबा मुक्तानन्द की दिव्य दीक्षा

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

१५ अगस्त को हम बाबा मुक्तानन्द की दिव्य दीक्षा का महोत्सव मनाएँगे, यह उस दिन की वर्षगाँठ है जब सन् १९४७ में बाबा जी को अपने श्रीगुरु, भगवान नित्यानन्द से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई थी। यह एक निर्णायक मोड़ था—निश्चित तौर पर बाबा जी के लिए उनकी अपनी साधना में, जैसा कि वे अपनी आध्यात्मिक आत्मकथा 'चित्शक्ति विलास' में उल्लेख करते हैं, और साथ ही हर उस व्यक्ति के लिए भी जो आने वाले वर्षों व दशकों में सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने वाला था। बड़े बाबा ने बाबा जी को शक्तिपात प्रदान किया जिसके फलस्वरूप, आगे चलकर बाबा जी ने सिद्धयोग पथ की स्थापना की।

यदि आपने अगस्त की शुरुआत में मेरे लेख पढ़े हैं तो आपको यह पता ही होगा कि गुरुमाई जी ने इस माह के लिए हमें केन्द्रण प्रदान किया है, ध्यान व मन्त्र-जप। यह एक ऐसा केन्द्रण है जिसे हम अगस्त माह के हरेक पर्व को मनाते हुए लागू कर सकते हैं।

पिछले सप्ताह, बड़े बाबा की पुण्यतिथि के पर्व के सन्दर्भ में मैंने श्रीगुरुमाई की कविता 'एक मन्दिर निराकार' के बारे में लिखा और यह भी लिखा कि हमारे आस-पास का संसार ध्यान व मन्त्र-जप के हमारे अभ्यासों के लिए प्रेरणादयी बन सकता है। अब, बाबा मुक्तानन्द की दिव्य दीक्षा का महोत्सव मनाने की तैयारी करते हुए, हम अपने उस अन्वेषण को *अन्तर* की ओर मोड़ सकते हैं। बाबा जी साधकों से दृढ़तापूर्वक कहते कि वे अन्तर-जगत की गहराइयों का निरीक्षण करें और बाबा जी समझाते कि बाह्य जगत के बारे में हमारी समझ व अनुभव का सीधा सम्बन्ध इस बात से है कि हम खुद के बारे में कितना जान पाए हैं। बाबा जी ने यह मूल सिखावनी प्रदान की :

आपको ध्याओ।
आपका सम्मान करो।
आपको समझो।
आपका राम, आपमें आप होकर रहता है।

प्रसंगानुसार, बाबा जी इस सिखावनी को थोड़े अलग-अलग रूप में प्रदान किया करते। उदाहरण के लिए, कभी-कभी वे "आपको पूजो।"—इस पंक्ति को सम्मिलित करते। परन्तु, मूल रूप से अर्थ एक ही था। *अन्तर में जाओ। अपने भीतर जाओ।* सन् १९७० से लेकर १९८१ के बीच बाबा जी ने तीन विश्वयात्राएँ कीं और 'ध्यान-क्रान्ति' लाने के अपने संकल्प के बारे में बाताया। 'ध्यान-क्रान्ति' इस शब्द ने हमेशा ही मेरा ध्यान आकर्षित किया है। 'क्रान्ति' एक ऐसा शब्द है जिसे हम प्रायः *बाहरी* परिवर्तन के साथ जोड़ते हैं। लोग अपने जीवन, अपने समाज, अपने देश और सम्पूर्ण विश्व में जो बदलाव देखना चाहते हैं, वह बदलाव लाने के लिए वे जो भी कृत्य करते हैं, वह है 'क्रान्ति'।

ऐसी क्रान्तियों के कारण अविश्वसनीय, व्यापक और कभी-कभी उथल-पुथल भरे परिवर्तन हुए हैं। उदाहरण के लिए, भारत को उसी दिन स्वतन्त्रता मिली थी जिस दिन बाबा जी को शक्तिपात प्राप्त हुआ था—१५ अगस्त, १९४७। तो फिर *अन्तर* में क्रान्ति होने का क्या अर्थ हुआ? बाबा जी ने जो सिखाया, उससे मुझे यह समझ में आया कि मानव-हृदय के स्तर पर भी परिवर्तन होना चाहिए। वास्तव में, *यही* वह परिवर्तन है जो चिरस्थायी है—यह वह रूपान्तरण है जो तब घटित होता है जब लोग अपने अन्तर में दिव्यता को देखते हैं और दूसरों में भी उसी दिव्यता को पहचानने लगते हैं। मैंने पहले भी गुरुमाई जी की इस इच्छा के बारे में लिखा है कि हम सब "इस संसार को एक बेहतर स्वर्ग बनाएँ।" ऐसा करने के लिए हमें खुद से शुरुआत करनी होगी।

जैसा कि बाबा जी अपनी सिखावनी में बताते हैं, हम आत्मा पर ध्यान करने का अभ्यास कर सकते हैं। हम मन्त्र-जप का अभ्यास भी कर सकते हैं। जब बड़े बाबा ने बाबा मुक्तानन्द को शक्तिपात दीक्षा प्रदान की तो उन्होंने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र दिया। आगे चलकर बाबा जी ने यही मन्त्र विश्वभर के हज़ारों साधकों को प्रदान किया। श्रीगुरुकृपा से अनुप्रणित, इस मन्त्र का जप करके, हम अपनी अन्तर-आत्मा का आवाहन कर रहे होते हैं। हम कह रहे होते हैं, "ॐ। मैं शिव को नमन करता हूँ, जो सभी की आत्मा हैं, अन्तरात्मा हैं।"

बाबा जी अकसर मन्त्र-जप की शक्ति और ध्यान के साथ इसके सम्बन्ध के बारे में बताते। बाबा जी की दिव्य दीक्षा के सम्मान में, इन दोनों अभ्यासों को करते हुए, हम उनके वचनों का आश्रय ले सकते हैं।

बाबा जी कहते हैं, "मन्त्र तुम्हें ध्यान की स्थिति तक ले जाता है। यह आत्मा की वाणी है। साधनाकाल के दौरान आध्यात्मिक अभ्यास करते समय ही मन्त्र केवल मन्त्र होता है, शब्दों का एक समूह होता है। जब यह फलीभूत होने लगता है तो यह स्वयं परमात्मा है; यह तुम हो।"[१]

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] स्वामी मुक्तानन्द, *What Is An Intensive?* द्वितीय आवृत्ति [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९५] पृ. १३।